c. सम् *Caus.* cibare, *c. instr. rei.* Mah. 3. 12672.

3. भुज् (r. 2. भुज्) edens, vescens, *in fine compos.* Bh. 4. 31.

भुज *m.* (r. 1. भुज् s. अ) 1) brachium. 2) manus. H. 1. 2. 3) elephanti proboscis. Dr. 8. 21. (Fortasse lat. *pugnus* pro *fug-nus* = part. pass. भुग्न.)

भुजग *m.* (tortuose iens e भुज, quod hic flexum, incurvationem significat, e ग iens) serpens. N. 11. 28. *V.* भुजङ्ग *et cf.* पतग, पतङ्ग.

भुजगी *f.* (a praec. signo fem. ई) *Fem. praec.* Hit. 121. 19.

भुजङ्ग *m.* i. q. भुजग (cf. पतङ्ग). Ur. 91. 10.

भुजमध्य *n.* (e भुज brachium et मध्य medium) pectus. Ragh. 13. 73.

भुजान्तर *n.* (e भुज et अन्तर) *id.* Ur. 70. 14.

भुजिष्य *m.* (ut videtur, a r. 1. भुज् s. स्य inserto इ) servus, famulus.

भुजिष्या *f.* (*fem.* praecedentis) serva, famula. N. 13. 55.

भुवन *n.* (r. भू s. अन, *omisso Gunae* incremento, v. euph. r. 51.) mundus. Ragh. 1. 26.: भुवनद्वय mundorum par i. e. coelum et terram; Ragh. 2. 53. N. 24. 33. Megh. 6.

1. भू 1. *P. A.* (भवामि, भवे; अभूवम् (gr. 414.), अभविषि; बभूव, बभूवे (gr. 445.); भविष्यामि, भविष्ये) 1) esse, existere. Bh. 16. 13.: इदम् अपि मे भविष्यति पुनर् धनम्; N. 10. 22.: कथम् बुद्धा भविष्यति. — *Cum antecedente* न mori. H. 4. 50.: अद्य न भविष्यसि; N. 21. 10.: न भविष्याम्य् असंशयम्. 2) esse *ut verb. substant.* Br. 3. 18.: भविष्यामि सुखान्विता; N. 1. 28.: सफलन् ते भवेज् जन्म; Br. 3. 8.: तत् तेषाम् विप्रियम् भवेत्; 12.: अनाथा कृपणा ... भविष्यामि. — *Cum dat.* esse *alicui rei,* praeditum esse *aliquâ re.* Br. 3. 19.: देवाश् च पितरश् च ... त्वया दत्तेन तोयेन भविष्यन्ति हिताय. Causam esse *alicujus rei.* Mah. 3. 12312.: त्रैलोक्यस्य ... भवन्ति स्म विनाशाय. — *Pass. impers. c. instrum. pers. et praedic.* Hit. 17. 20.: अधुना तवा 'नुचरेण मया सर्वदा भवितव्यम्; Ur. 38. 3. infr.: प्रत्यासन्नेन चन्द्रेण भवितव्यम्. 3) fieri, oriri. Bh. 14. 17.: प्रमादमोहौ तमसो भवतः; N. 23. 11.: ते तेना 'वेष्टिताः कुम्भाः पूर्णा एवा 'भवंस् ततः; A. 3. 27.: तस्य तच् छतधा रूपम् अभवत्; Mah. 1. 1501.: भस्मसाद् भवेत्. — *Part. pass.* भूत 1) qui est, existit. Su. 1. 25.: त्रिषु लोकेषु यद् भूतङ् किञ्चित् स्थावरजङ्गमम्. *In fine comp.* N. 12. 38.: अस्या 'रण्यस्य महतः केतुभूतम् इवो 'च्छ्रितम् (शिलोच्चयम्). 2) factus. A. 3. 28.: पुनस् तानि शरीराणि एकीभूतानि भारत। अदृश्यन्त. — भूत *subst. n.* creatura, animans, res. H. 4. 32. Su. 2. 7. Bh. 2. 69. N. 14. 2. Bh. 7. 26. — *Caus.* भावय् 1) facere ut alqs existat, sustentare, nutrire. Mah. 3. 8763.: ता (प्रजाः) भाविता भावयन्ति हव्यकव्यैर् दिवौकसः; Bh. 3. 11.: देवान् भावयता 'नेन ते देवाः भावयन्तु वः। परस्परम् भावयन्तः श्रेयः परम् अवाप्स्यथ. 2) cogitare, meditari (secundum gramm. Ind. भू cl. 10.). Bh. 2. 66.: ना 'स्ति बुद्धिर् अयुक्तस्य नचा 'युक्तस्य भावना। नचा 'भावयतः शान्तिः; R. Schl. II. 67. 20.: भावयन्न् आत्मना 'त्मानम्. — *Desid.* 1. esse, existere velle. Mah. 4. 678.: न तिष्ठति स्म सन्मार्गे नच धर्मे बुभूषति. 2) eligere *conjugem.* Mah. 1. 7068.: यदि कन्ये 'यन् नच कश्चिद् बुभूषति; 7969.: को बुभूषेत ना 'र्जुनम्. (Lat. *fu-i, fu-turus, fo-re*; *-bam* (*ama-bam*) = अभवम्, *-bo, -bimus* = भविष्यामि, भविष्यामस्, v. gr. comp. 526. 662.; gr. φύ-ω, ἔφῡ-ν, ἔφῡ-ς, ἔφῡ = अभूवम्, अभूस्, अभूत्, v. gr. comp. 573.; lith. *bú-ti* esse, *bu-waú* fui = अभवम्, *bú-su* ero = भविष्यामि, v. gr. comp. 522. 652.; slav. *by-ti* esse, *bú-dú* ero; germ. vet. *bim* sum, nostrum *bin*, *bir-u-mês* sumus = भवामस्, mutato *v* in *r*, v. gr. comp. 20.; hib. *fuilim* sum, *ba me* vel *budh me* fui, proprie fuit ego, *ba* = अभवत्, *budh* = अभूत्. Ad Caus. भावयामि traxerim lat. *facio* mutato *v* in *c* sicut e. c. in *vic-si, vic-tum*, v. gr. comp. 19.; *fê-mina*, quae procreat, gignit, suff. *mina* = मान, gr. μενη, sicut *mini* formarum ut *ama-mini* = मानास्, μενοι, v. gr. comp. 478.; *fê-tus, fe-tura*; goth. *baua* aedifico, *bauais* aedificas, ubi *ai* = अय τοῦ भावयसि, v. gr. comp. 109[a]. 6. et cf. scr. भवन domus.)

c. अनु 1) adesse, interesse. N. 5. 40.: अनुभूया 'स्य वि-